International Conference on Latest Trends in Science, Engineering, Management and Humanities (ICLTSEMH -2025)
19th January, 2025, Noida, India.

CERTIFICATE NO : ICLTSEMH /2025/C0125281

# सूर्यबाला जी के उपन्यासों में नारी संवेदना

**Kunchikorave Dipa Prakash**
Research Scholar, Department of Hindi, Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

**शोध सारांश**

सूर्यबाला हिंदी साहित्य की एक प्रतिष्ठित और सशक्त उपन्यासकार हैं, जिनके उपन्यासों में नारी जीवन की गहन जटिलताओं, अंतर्द्वंद्वों और सूक्ष्म संवेदनाओं का मार्मिक एवं यथार्थवादी चित्रण मिलता है। उनकी कृतियों में स्त्री केवल अबला या शोषित के रूप में ही चित्रित नहीं होती, अपितु एक जागरूक, स्वावलंबी और परिवर्तन की सूत्रधार के रूप में भी मुखरित होती है। इस अध्ययन में सूर्यबाला के उपन्यासों के माध्यम से नारी संवेदना के बहुविध आयामों—यथा पारिवारिक संबंधों की पेचीदगियाँ, सामाजिक बंधनों का दबाव, आंतरिक मानसिक संघर्ष, आत्म-अनुभूति की प्रक्रिया और मुक्ति की तीव्र आकांक्षा—का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। उनके उपन्यास आधुनिक नारी की विशिष्ट पहचान, उसकी अस्मिता की खोज और आत्म-सम्मान की प्रबल अभिव्यक्ति बनकर पाठकों के हृदय को गहराई से आंदोलित करते हैं।

यह शोध नारीवादी परिप्रेक्ष्य से सूर्यबाला की उपन्यास-संवेदना को समग्र रूप से समझने का एक गंभीर प्रयास है, जिसका उद्देश्य हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री के सशक्त स्वर को अधिक स्पष्टता और गहराई से पहचानना है। उनके उपन्यासों का यह आलोचनात्मक अध्ययन न केवल नारीवादी चिंतन को समृद्ध करेगा, बल्कि हिंदी साहित्य के व्यापक परिदृश्य में स्त्री लेखन के महत्व को भी पुनर्स्थापित करने में सहायक होगा। सूर्यबाला के उपन्यासों की विस्तृत कथाभूमि और चरित्रों की मनोवैज्ञानिक गहराई नारीवादी आलोचना के लिए एक उर्वर क्षेत्र प्रस्तुत करती है, जिसके अन्वेषण से समकालीन नारी जीवन की जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

**बीज शब्द** - सूर्यबाला, नारी संवेदना, हिंदी उपन्यास, स्त्री विमर्श, सामाजिक यथार्थ, नारी चेतना।